उपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० हि०— पत्र

दिगंत - भाग - 2 - गद्य भाग

शीर्षक - 'ओ सदानीरा'

लेखक - श्री जगदीशचन्द्र माथुर

प्रश्नः - चम्पारण क्षेत्र में बाढ़ की प्रचंडता के क्या कारण हैं?

उत्तरः - बिहार के चंपारण क्षेत्र में बाढ़ की वीभिषिका से एक विशाल क्षेत्र प्रभावित है। गंडक, मसान, सिकराना इत्यादि इस क्षेत्र में नदियाँ प्रवाहित होती है। अपने आस-पास हरे-भरे वृक्षों के नयनाभिराम दृश्य के बीच मखमली हरित-कालीन सी उर्वरा भूमि को निरंतर अपने जल से सिंचित करती है। मनुष्य, पशु, पक्षी आदि समस्त प्राणियों की प्यास भी इनके जल से बुझती है, तभी तो लेखक ने उन्हें सम्बोधित किया है "ओ सदानीरा"।

परन्तु, लेखक के कथनानुसार पिछले छह-सात सौ साल से, चंपारण से गंगा तक फैले 'महावन' अर्थात् विस्तृत क्षेत्र में फैले वन के वृक्षों का काटा जाना निरन्तर जारी है। यहाँ वनों की कटाई तेजी से हो रही है। इसके परिणामस्वरूप नदियों के तटों पर पानी का कटाव सदा चलता रहता है। इन नदियों ने अपना धैर्य खो दिया है। अब उसके पानी को रोकना आसान काम नहीं है।

अतः वर्षा ऋतु में हिमालय की ढलान से बहकर आया जल तथा वर्षा का जल बाढ़ की प्रचंडता का कारण बन जाता है। इस त्रासदी को झेलने के लिए यहाँ निवास करने वाले विवश और लाचार हैं।

डॉ० देवचरण प्रसाद 29/04/20
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० उ० सं० महाविद्यालय सुरखसेना, पूर्णियाँ

Date ________ Page ______

सामर्थ्य हो वह सब कुछ अपने ही न हजम कर जाँय। थोड़ा बहुत दूसरों को भी दें और अपने तथा अपनों की परवरिश के लिए जीवन भर संघर्ष करें। ऐसा करने से ही समाज में समरसता बनी रहेगी।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी 29/10/20
शा० स्ना० सं० महावि० दुर्गवसेना, पूर्णियाँ

शाखी द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ०द्वि० – पत्र

निबंधमाला – गद्य भाग

शीर्षक :- 'पेट'

Date: _____ Page: _____

लेखक – पंडित प्रताप नारायण मिश्र

प्रश्न:- 'पेट' शीर्षक निबंध का महत्व स्पष्ट करें।

उत्तर:- निबंधकार पंडित प्रताप नारायण मिश्र ने 'पेट' शीर्षक निबंध के माध्यम से कई महत्वपूर्ण तथ्यों को पाठकों के समक्ष रखा है। उनका कहना है कि पेट की महिमा अपरम्पार है। पेट पिण्ड से लेकर ब्रह्माण्ड तक को नियंत्रित करता है। पेट की इसी महत्ता को स्वीकार करते हुए भगवान श्रीकृष्ण ने अपना नाम दामोदर रखा था। पेट की सुन्दरता के कारण ही प्राचीनकाल में सुन्दरियाँ कृशोदरी कहलाती थी।

लेखक के कथनानुसार पेट की आँच बड़ी कड़ी होती है। इसे सहना बहुत कठिन है। अथक परिश्रम के बाद भी पेट का जुगाड़ न हो सके तो यह क्षुधा-यन्त्र नर्क का रूप धारण कर लेता है। इस पेट को भरने के लिए ही लोग देश-विदेश भटकते रहते हैं। परिवार के सदस्यों का पेट भरने के लिए ही हजारों लोग पलायन करने के लिए विवश हो जाते हैं।

इस देश में ऐसे लोग की भी कमी नहीं है जो दूसरों के पेट पर लात मारकर तरह-तरह के तिकड़म और धोखे से ढेर सारा धन अर्जित कर लेते हैं। इनका पेट कभी नहीं भरता है। बिना डकार लिए सब कुछ हजम कर जाते हैं। ये दूसरे को कुछ भी देने को तैयार नहीं होते हैं। लगता है जैसे इनका ही पेट सबसे बड़ा है।

ठगी और बेईमानी से धन एकत्र करने वाले कंजूसों को लेखक महोदय चेतावनी भी देते हैं। वे कहते हैं कि केवल धन बटोर कर उसे अपने ही स्वार्थ में जमा करते जाना कभी भी हितकर नहीं है। धनवानों को चाहिए कि वे दूसरों में भी उसे बाँटे। अन्यथा सम्भव है कि एक दिन ऐसी आग भड़केगी कि किसी को भी जलाये बिना नहीं छोड़ेगी।

धार्मिक दृष्टिकोण से भी पेट का काफी महत्व है। माताएँ अपनी संततियों को नौ मास अपने पेट में ढोती हैं, इसलिए धरती पर इनसे अधिक पूज्य दूसरा कोई देवी-देवता नहीं है।

इस प्रकार मिश्रजी कहना है कि जिनके पास

शेष आगे –

भेजती है। इसी बीच सियाराम जहर खाकर आत्महत्या कर लेता है। इस घटना से निर्मला में कठोरता आ जाती है। वह सियाराम को ताड़ना देने लगती है। सियाराम घर से ऊब कर साधु हो जाता है। मुंशी तोताराम उसकी खोज में निकल पड़ते हैं। शेष अगले कक्षा में।

डॉ० देवचरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
29/10/20
रा०उ०सं०महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ

शास्त्री प्रथम खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ०द्वि०-पत्र

'निर्मला' उपन्यास

लेखक- मुंशी प्रेमचन्द

प्रश्न:- 'निर्मला' उपन्यास की विषयवस्तु के औपन्यासिक गुण की समीक्षा- शेष भाग

उत्तर:- मंसाराम की मृत्यु मुंशी तोताराम के सन्देह को दूर कर देती है। वे पश्चाताप से भर जाते हैं। वे मंसाराम के प्रति निर्मला के विशुद्ध वात्सल्य को पहचान लेते हैं। पुत्र शोक में मुंशी तोताराम की हालत बिगड़ती चली जाती है। साथ ही साथ उनकी वकालत का पेशा भी मन्द होती जा रही है।

इसी बीच में सुधा और उसके पति डॉक्टर भुवन-मोहन सिन्हा की कथा प्रारम्भ हो जाती है। डॉक्टर सिन्हा वही हैं, जिनसे निर्मला के विवाह की बात-चीत पक्की होकर टूट ~~गयी थी~~ गई थी। सुधा निर्मला की सारी करुण गाथा सुनकर काफी चिंतित हो जाती है। वह अपने देवर का विवाह निर्मला की छोटी बहिन कृष्णा से करा देती है। निर्मला को लड़की होती है और सुधा को लड़का। मुंशी तोताराम निर्मला की पुत्री में अपने खोये हुए पुत्र को पाना चाहते हैं।

उपन्यास में पुनः नाटकीय मोड़ उपस्थित हो गया है। सुधा के पुत्र की मृत्यु हो जाती है। निर्मला मायके से अपने घर आ जाती है। मुंशी तोताराम के दोनों पुत्र इतने अधिक उच्छृंखल हो जाते हैं कि उनसे वे लड़ने लगते हैं। निर्मला के आते ही घर में द्वन्द्व और अधिक बढ़ जाता है। मुंशी तोताराम की वकालत से आय और कम हो जाती है। अतः निर्मला गृहस्थी का खर्चा पूरा करने और पुत्री के भविष्य की चिंता में कंजूसी करना शुरू कर देती है।

मुंशी तोताराम के लड़कों की उच्छृंखलता बढ़ती चली जाती है। जियाराम एक दिन निर्मला के आभूषणों की पेटी चुरा लेता है। पुलिस में रिपोर्ट होती है, जियाराम पकड़ा जाता है। निर्मला पुलिस को रिश्वत देकर मामला रफा-दफा करने के लिए पति को

शेष आगे-